

आरती कीजै नरसिंह कुंवर की ।  
वेद विमल यश गाउँ मेरे प्रभुजी ॥

पहली आरती प्रह्लाद उबारे ।  
हिरणाकुश नख उदर विदारे ॥

दुसरी आरती वामन सेवा ।  
बल के द्वारे पधारे हरि देवा ॥

तीसरी आरती ब्रह्म पधारे ।  
सहसबाहु के भुजा उखारे ॥

चौथी आरती असुर संहारे ।  
भक्त विभीषण लंक पधारे ॥

पाँचवीं आरती कंस पछारे ।  
गोपी ग्वाल सखा प्रतिपाले ॥

तुलसी को पत्र कंठ मणि हीरा ।  
हरषि-निरखि गावे दास कबीरा ॥